प्रधान मंत्री द्वारा मारीशस की राष्ट्रीय असेम्बली को सम्बोधन

दिनांक 31 मार्च,2005
मारीशस

मेरे स्वागत में आपने जो शब्द कहे हैं और इस महान सदन को सम्बोधित करने का अवसर देकर मुझे जो सम्मान दिया है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

यह असेम्बली, प्रतिनिधिक लोकतंत्र के प्रति मारीशस के लोगों के दृढ़ संकल्प की प्रतीक है। मारीशस में बहु-भाषाभाषी, बहु-जातीय और बहु-धर्मी लोग रहते हैं और इस अत्यधिक विविधता को देखते हुए मारीशस के लोकतंत्रीय अनुभव की उल्लेखनीय सफलता दुगुनी प्रभावशाली दिखाई देती है। जनसांख्यिकी तथा सामाजिक विविधता लोकतंत्र के मार्ग में कोई बाधक नहीं है, बल्कि यह इसका एक आवश्यक हिस्सा है।

बहुलवाद को अपनाना आज के युग की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। एक ऐसा बहुलवाद जो सभी को साथ लेकर चलने वाली राजनीति और एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना सुनिश्चित करता हो। इस बात की जागरूकता बढ़ रही है कि वैश्वीकरण के लिए एक ऐसे खुले, सामूहिक और विविध समाजों की न केवल जरूरत बल्कि मांग है जहां लोग परस्पर सद्भाव और निर्भरता के साथ रह सकें। सहयोगात्मक अन्तरराष्ट्रीय व्यवस्था को नया स्वरूप प्रदान करने की हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम शांति और खुशहाली के माहौल में रह रहे बहु-सांस्कृतिक समाजों का विस्तार करने में कितने सफल होते हैं।

भारत और मारीशस को चाहिए कि वे आगे आकर समाज और मानव समाज को यह दिखाएं कि बहुलवाद संभव है, बहुलवाद समय की मांग है और बहुलवाद को अपनाकर हम अन्तरराष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां समाज के अन्दर शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा सद्भावपूर्ण संबंधों की दुश्मन ताकतें बहुलवाद को नकारती हैं। भारत और मारीशस ने विविधता और बहुलवाद को चलाने का जो भरपूर और सफल अनुभव हासिल किया है, उसे देखते हुए उनमें हमें भावी आशा की किरणें दिखाई देती हैं।

इस अवसर पर मैं दूरदर्शी राजनेता सर शिवसागर रामगुलाम की स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा जो एक विश्व नागरिक के उच्च मूल्यों से ओत-प्रोत थे। वे न केवल मारीशस के राष्ट्रपिता थे, बल्कि भारत के एक अत्यधिक प्रिय और सम्मानित मित्र भी थे। उनके व्यक्तित्व की छाप अभी भी उन संबंधों में स्पष्ट दिखाई देती है, जो हमारे लोगों को आपस में जोड़ते हैं।

सर शिवसागर रामगुलाम एक ऐसे देश में लोकतांत्रिक शासन तथा संस्थागत निर्माण का अनोखा प्रयोग करने के जनक रहे हैं जहां एक ओर विविधतापूर्ण समाज था तो दूसरी ओर, अत्यधिक दूरी और सीमित प्राकृतिक संसाधनों से उत्पन्न कठिनाईयों के कारण शेष विश्व के साथ व्यापार में असाधारण बाधाएं थीं। जिस तरह से यह अनोखा प्रयोग फूला-फला है, उसकी इसके आरम्भ में इतनी आसान कल्पना भी नहीं की गई थी। अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, मारीशस ने दुनिया को यह दिखा दिया है कि कड़ी मेहनत और उद्यमशीलता से एक ऐसे इन्द्रधनुशी राष्ट्र का निर्माण संभव है जहां सशक्त लोकतंत्र हो, सामाजिक सौहार्द हो और लोगों का सम्मानजनक जीवन स्तर हो।

आर्थिक विकास की जांच करने के अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के एक आधिकारिक अध्ययन ने इसे "मारीशस का चमत्कार" बताया है। इसका श्रेय आपकी सफलता के उस चमत्कार को जाता है जो आपने विविधता और समुचित संस्थागत व्यवस्था को चलाने में किया है। इसे आज राष्ट्र निर्माण में संस्थाओं के महत्व के उदाहरण के रूप में व्यापक तौर पर उद्धृत किया जाता है। इसका श्रेय सर शिवसागर रामगुलाम तथा आपके राष्ट्र के संस्थापकों को जाता है कि उन्होंने उस प्रक्रिया को शुरू किया जिसकी आज विश्व प्रशंसा करता है। हमें भारत में मारीशस की सफलता पर खुशी होती है, विशेष रूप से बन्धुत्व के उन अनेक संबंधों के कारण जिनकी साझी डोर से हम एक-दूसरी से जुड़े हुए हैं।

भारत और मारीशस परस्पर मित्रता, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा साझे ऐतिहासिक अनुभव के अटूट बंधनों से जुड़े हुए हैं। भारत में हम महात्मा गांधी की ऐतिहासिक दांडी यात्रा की 75वी वर्षगांठ मना रहे हैं। मारीशस ने 12 मार्च को अपना राष्ट्रीय दिवस मनाया है। हमारे दोनों देशों के बीच घनिष्ठता और विशेष संबंधों का इससे बेहतर सबूत और क्या हो सकता है? अप्रवासी घाट के जीर्णोद्धार में शामिल होना भारत के लिए एक सम्मान की बात है। यह वह स्थल है जहां गांधी जी आए थे। यह निश्चय ही विश्व विरासत स्थल घोषित करने योग्य है।

हमारे आपसी संबंध न केवल हमारे अनेक द्विपक्षीय सहयोग में ही बल्कि हमारे उन साझे दृष्टिकोणों में भी परिलक्षित होते हैं जिन्हें हमने विश्व समुदाय के सामने लगभग सभी बेहद जरूरी मुद्दों पर अपनाया है। हम मारीशस के कल्याण और विकास को अपनी विदेश नीति की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में स्थान देते हैं।

आपकी उपलब्धियों पर हमें खुशी और गर्व होता है और हम पुनः प्रतिज्ञा करते हैं कि मित्रता के हमारे ऐतिहासिक संबंधों ने इस सदी, जो अभी अपने शुरुआती दौर में है, में हमारे सहयोग को आगे बढ़ाने की जो जिम्मेदारी हमें सौंपी है उसे हम पूरा करेंगे।

जहां तक आर्थिक मोर्चे का संबंध है, मारीशस की विकास दर पिछले दशक से औसतन 5 से 6 फीसदी तक बढ़ी है। यह उपलब्धि जिसमें आपके बेहतर शुगर और कपड़ा उद्योगों तथा शानदार पर्यटन क्षेत्र का बड़ा योगदान रहा है, कोई छोटी उपलब्धि नहीं है और इसका श्रेय आपके गणतंत्र की उत्तरोत्तर सरकारों द्वारा दिए श्रेष्ठतम नेतृत्व को जाता है।

आज जबकि हम अपने मजबूत और घनिष्ठ संबंधों और मौजूदा सहयोग की सफलता का गुणगान कर रहे हैं, हमें इस दिशा में भी सजग रहना होगा कि विश्वभर में परिवर्तन की हवा चल रही है। वैश्वीकरण की सक्रिय शक्तियों ने जहां एक ओर चुनौतियां खड़ी की हैं तो दूसरी ओर, नए अवसर भी मुहैया कराए हैं। भारत और मारीशस दोनों ही परिवर्तन की इस हवा से अछूते नहीं हैं। इसलिए हमें इन नई चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अपने आपको तैयार करने की जरूरत है। मारीशस ने तेजी से बदल रहे अंतरराष्ट्रीय माहौल के अनुरूप अपने को ढ़ालने के लिए उल्लेखनीय प्रयास शुरू कर दिए हैं जिनके तहत नई दक्षताओं का विकास हो रहा है, विभिन्न प्रकार के उच्च मूल्य वर्धित उत्पादों और सेवाओं को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और क्षेत्र के बड़े-बड़े बाजारों में वह अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इससे हमारे दोनों देशों को परस्पर हित का आर्थिक सहयोग करने के अवसर मिले हैं जिनके आधार पर हम दोनों देशों को समृद्ध और खुशहाल बनाने के अपने साझे लक्ष्य को हासिल करने के लिए मिलकर कार्य कर सकते हैं।

मेरी इस यात्रा के दौरान, हम विभिन्न क्षेत्रों में समझौतों पर हस्ताक्षर करके मौजूदा सहयोग का और विस्तार करने जा रहे हैं। भारत और मारीशस के बीच प्रस्तावित व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी करार से हमारे द्विपक्षीय संबंधों को एक नया आयाम मिलेगा। हमने संयुक्त अध्ययन दल की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है और इन पर अमल करने के लिए एक अधिकार-प्राप्त वार्ता दल गठित करने पर हम सहमत हुए हैं। मुझे विश्वास है कि मुक्त व्यापार समझौता जो साझेदारी करार का केन्द्र बिन्दु होगा, हमारे दोनों देशों के बीच अधिक गहरे आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस पवित्र सदन को फिर से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि चूंकि मारीशस की अर्थव्यवस्था नई मजबूती तथा क्षमताओं के दौर से गुजर रही है, अतः भारत हमेशा की तरह इस साहसिक और शानदार प्रयास में मारीशस का साथ देता रहेगा।

जिन प्रमुख नए आर्थिक क्षेत्रों में से एक की आपने पहचान की है और जो आपके देश की तरक्की और खुशहाली के लिए महत्वपूर्ण है, वह है– सूचना प्रौद्योगिकी। साइबर टॉवर, जिसका मैं बाद में उद्घाटन करूंगा, इस बात का एक और उदाहरण है कि मारीशस और भारत मिलकर क्या कुछ कर सकते हैं।

मानव संसाधन विकास राष्ट्र की तरक्की का एक महत्वपूर्ण साधन है। हम अपने देश के उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी और चिकित्सा संस्थानों की तर्ज पर मारीशस को उसके यहां उत्कृष्ट संस्थान स्थापित करने में मदद करेंगे। आईटीईसी कार्यक्रम का मारीशस की जरूरतों के अनुसार विस्तार किया जाएगा।

इसी तरह का सहयोग स्वास्थ्य, औषधि-निर्माण, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, वित्त और प्रबंधन तथा लघु एवं मझौले उद्यमों में संभव है।

मारीशस के व्यापक विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र का अभी बहुत की कम इस्तेमाल हो पाया है। भारत, मारीशस को उसकी भूमि और समुद्री सीमा की सुरक्षा और सम्प्रभुता सुनिश्चित करने में मदद देगा।

नई सहस्त्राब्दि की बहु-आयामी चुनौतियों से निपटने के लिए हमारी भागीदारी महत्वपूर्ण है। पिछले वर्ष 26 दिसम्बर को सुनामी के विनाशकारी प्रभाव ने एक बार फिर इस ओर ध्यान खींचा है कि छोटे द्वीपसमूहों वाले विकासशील देश और निचले तटीय क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं से कितने असुरक्षित हैं। सुनामी पीड़ितों के प्रति दिखाई गई हमदर्दी, एकजुटता और उन्हें उपलब्ध कराई गई मदद के लिए हम मारीशस को धन्यवाद देते हैं।

ये ऐसी घटनाएं थीं जो यह याद दिलाती हैं कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए यह जरूरी है कि वह छोटे द्वीपसमूहों वाले विकासशील देशों को उनकी विशेष परिस्थितियों तथा प्राकृतिक आपदाओं के खतरों से निपटने, साथ ही जलवायु परिवर्तन के अनुकूल अपने को ढालने तथा समुद्री स्तर के बढ़ने की चुनौती से निपटने के प्रयासों में उनकी राष्ट्रीय क्षमताएं बढ़ाने में मदद देने के लिए तुरंत कार्रवाई करे।

पिछले वर्ष भारत के राष्ट्रपति ने पैन अफ्रिकन पार्लियामेंट को अपने संबोधन के दौरान यह प्रस्ताव किया था कि अफ्रीकी संघ के सभी राष्ट्रों को एकीकृत उपग्रह तथा फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क से जोड़ा जाए जो भारत द्वारा 50 मिलियन डालर की आरम्भिक लागत पर उपलब्ध कराया जाएगा। हमें खुशी है कि मारीशस इस कनेक्टिविटी मिशन में शामिल होने वाले देशों में पहला देश होगा।

हम इंडियन ओसन रिम एसोसिएशन ऑफ रीजनल कोऑपरेशन, साउथ अफ्रिकन डेवलेपमेंट कम्युनिटी शुरू करने और उसके कार्य-संचालन में तथा अफ्रीकी संघ में मारीशस के नेतृत्व का बड़ा सम्मान करते हैं। अब जबकि मारीशस पड़ोसी बाजारों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को बढ़ा रहा है, ऐसे में हम मारीशस के साथ अपने आर्थिक संबंधों को परस्पर लाभप्रद साझीदारी के रूप में देखते हैं। इससे हमारे दोनों देश आर्थिक संबंधों के इस बढ़े दायरे से लाभान्वित होंगे।

हम समझते हैं कि विश्व में राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता सुनिश्चित करने के सहयोगपूर्ण बहु-पक्षीय प्रयासों में संयुक्त राष्ट्र की अहम भूमिका है। भारत के पास सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की इच्छा-शक्ति और क्षमता है। हमारी सदस्यता से सुरक्षा परिषद का प्रभाव, विश्वसनीयता और वैद्धता बढ़ेगी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य के रूप में भारत की दावेदारी के समर्थन में मारीशस ने लगातार जो रुख अपनाया है, हम उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

हमारे दोनों देशों के तटों पर एक ही महासागर का पानी बहता है। इस एक-दूसरे पर निर्भर विश्व में हमारे दोनों देशों की नियति परस्पर एक-दूसरे से बंधी हुई है।
भारतीय प्रवासी जीवन-यापन की तलाश में लम्बी दूरी तय करके दूरस्थ देशों तक पहुंचे हैं, लेकिन वे कभी भी हमारे दिलो-दिमाग से दूर नहीं रहे हैं और इसमें मारीशस के लिए विशेष जगह है। मैं, भारत सरकार और भारत की जनता की ओर से विश्वास दिलाता हूं कि भारत मारीशस की समृद्धि और खुशहाली के लिए दोस्ती के प्रति हमेशा प्रतिबद्ध रहेगा।

आपने इस प्रतिष्ठित असेम्बली को संबोधित करने का जो अत्यधिक सम्मान मुझे दिया है, उसके लिए मैं आपको पुनः एक बार धन्यवाद देता हूं।

.....